जून-2017

॥ओ३म्॥

मूल्य 10 रुपये

गुरुकुल आश्रम आमसेना की मासिक पत्रिका

कुलभूमि

स्वर्ण जयन्ती वर्ष 2017

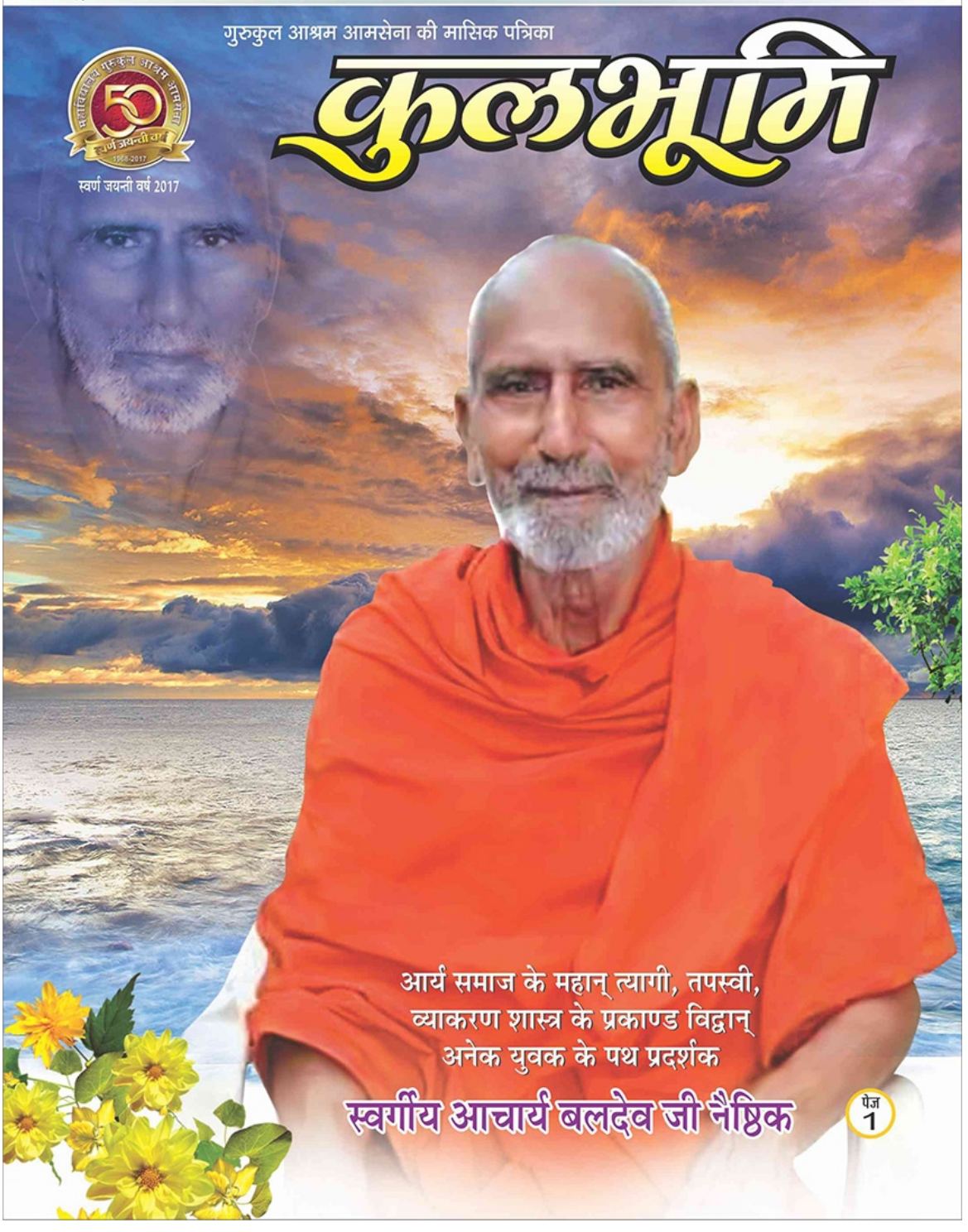

आर्य समाज के महान् त्यागी, तपस्वी,
व्याकरण शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान्
अनेक युवक के पथ प्रदर्शक

स्वर्गीय आचार्य बलदेव जी नैष्ठिक

पेज 1

दक्षिण दिल्ली की प्रतिष्ठित आर्य समाज साकेत प्रतिवर्ष ''योग साधना एवं वैदिक संस्कार शिविर'' का आयोजन करती है। इस वर्ष यह 11 वां शिविर गुरुकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार उत्तराखंड में 3 जून से 9 जून 2017 तक आयोजित था। जिसमें गुरुकुल आमसेना व गुरुकुल हरिपुर से 26 ब्रम्हाचारियों ने डा. कुजंदेव मनीषी के नेतृत्व में भाग लिया । इसी क्रम में आर्य समाज साकेत ने सभी विद्यार्थियों को एक दिन का दिल्ली भ्रमण भी करवाया। सभी ब्रम्हाचारियों के आने-जाने आदि का सम्पूर्ण व्यय आर्य समाज साकेत ने वहन किया। गुरुकुल की ओर से इसके लिए समाज के प्रधान श्रद्धेय डा. पूर्णसिंह डबास, आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री, आचार्य मंजीत शास्त्री आदि सभी का आभार प्रकट करते हैं।

विस्तृत समाचार अगले अंक में...

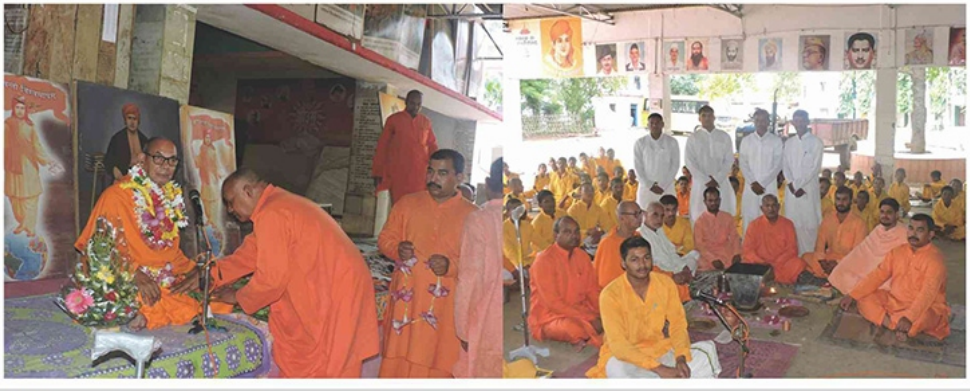

गुरुकुल आश्रम आमसेना, आदर्श कन्या गुरुकुल आमसेना आदि अनेक संस्थाओं के संचालक एवं संस्थापक स्वामी धर्मानन्द जी का ५६ वां दीक्षा दिवस २६ जून को गुरुकुल में अति श्रद्धा एवं उत्साह पूर्वक मनाया गया।

!! ओ३म् !!

कुलभूमिरियं वितरेज्जगते, सुमतिं विदुषामिहवेदविदाम्।
ऋषिभिश्चरितं महता तपसा, शुभं धर्मधिया सकलोन्नतिकृत।।

कुलभूमि

गुरुकुल आश्रम आमसेना का मासिक मुखपत्र

जून 2017 वर्ष - 40, अंक - 06 वि.सं. - 2074
सृष्टि संवत् - 1, 96,08,53,118, दयानन्दाब्द - 193

प्रतिष्ठाता
श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती
संचालक एवं मुख्याधिष्ठाता

संरक्षिका एवं प्रधाना
माता परमेश्वरी देवी

कुलपति
श्री मिठाईलाल सिंह जी

संरक्षक
श्री डॉ.पूर्णसिंह जी डबास

परामर्श दाता
श्री आचार्य सोमदेव जी शास्त्री
श्री आचार्य वीरेन्द्र कुमार जी

प्रधान सम्पाद
श्री स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती

सम्पादक
श्री डॉ.कुञ्जदेव जी मनीषी

सह सम्पादक
कोमल कुमार आर्य
ब्र.मनुदेव वाग्मी

आदरी सम्पादक
श्री शरच्चन्द्र जी शास्त्री
सुश्री आचार्या पुष्पा ''वेदश्री''

सहयोगी
श्री जगदीश जी राय बंसल
श्री अवनी भूषण पुरंग जी
श्री राजेन्द्र जी धनखड़
श्री घनश्याम जी अग्रवाल
श्री जगदीश जी पसरीचा
श्री रोहित नरुला जी

व्यवस्थापक
ब्र. राकेश शास्त्री
ब्र. प्रवीण कुमार शास्त्री

महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव की तैयारियां प्रारम्भ

दक्षिण-पूर्व भारत को आर्यों के तीर्थस्थान, वैदिक धर्म के रक्षक, भारतीय संस्कृति के प्रहरी, आर्य जगत को उच्चकोटि के विद्वान् एवं सेवक तैयार करने वाले महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना को अब स्थापित हुए ५० वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। इस ५० वर्षिय अर्द्ध शताब्दी पर गुरुकुल का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव अत्यन्त उल्लासमय वातावरण में २३, २४, २५ दिसम्बर २०१७ को मनाया जाएगा। गुरुकुल का यह समारोह सारे आर्य जगत के लिए प्रेरणाप्रद एवं नया उत्साह देने वाला हो। इस पवित्र भावना को लेकर महोत्सव की तैयारियाँ प्रारम्भ कर दी गई है।

आशा है श्रद्धालु जनों का पूर्ण उत्साह पूर्वक सहयोग एवं आशीर्वाद इस कार्यक्रम को सफल करने को मिलेगा।

लेखों में दिये गये विचारों के लिये सम्पादक उत्तरदायी नहीं है ।

-: प्रकाशक एवं मुद्रक :-

गुरुकुल आश्रम आमसेना

व्हाया - खरियार रोड, जिला नुआपड़ा (ओडिशा) 766109
Web - *WWW.Vedicgurukulamsena.com*, मो.नं. 9437070541/615,
Email-*aumgurukul@rediffmail.com* *7873111213*
खाते का नाम : आचार्य गुरुकुल आश्रम आमसेना SBI खरियार रोड
खाता संख्या : *11276777048* IFSC Code : SBIN*0007078*
गुरुकुल को दिया गया दान में **80G** के अन्तर्गत आयकर मुक्त है ।

वेदोपदेश:

यो जागार तमृचः कामयन्ते, यो जागार तमु सामानि यन्ति।
यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योका।।

आचार्य ज्ञानेश्वर जी

शब्दार्थ :- यः- जो, **जागार**- जागता है, **तम् ऋचः**- उसे वेद मन्त्र, **कामयन्ते**- चाहते हैं, **यः**- जो, **जागार**- जागता है, **तम**- उसे ही, **सामानि**- स्तुतियाँ, **यन्ति**- प्राप्त होती है, **यः**- जो, **जागार**- जागता है, **तम् अयम्**- उसे यह, **सोम**- भोग्य संसार, **आह**- कहता है, **तव अहम् अस्मि**- मैं तेरा हूँ, **सख्ये न्योका**- तेरी मित्रता में मेरा निवास है।

जगत् प्रसिद्ध कहावत है कि जो जागत है सो पावत है। जो सोवत है सो खोवत है। यही बात इस मन्त्र में कही गई है। कि जो मनुष्य अपनी चेतना को जान लेता है, अपने गुणों को समझ लेता है और अपनी शक्तियों को पहचान लेता है उसके लिए सारा संसार व संसार के भोग्य पदार्थ हाथ जोड़कर सामने उपस्थित हो जाते हैं, उसके अपने हो जाते हैं। उन सबको वह भोग लेता है इसके विपरीत जो अज्ञानी मनुष्य अपने आपको (हाथ, पाँव, आँख, नाक, पेट) सिर का पिण्ड मात्र मानता है वह अपने चेतन स्वरूप कर्त्तव्यरूप से अनभिज्ञ होता है। वह ऐश्वर्ययुक्त प्राकृतिक भोगों को भोगने की बात दूर रही अपना पेट भी पूरी तरह से भर नहीं सकता है। इसी बात को इस रूप में कहा गया है कि ''सकल पदारथ है जग माँही। कर्म हीन फल पावत नाँहीं।'' दूसरे रूप में भी एक लोकोक्ति प्रसिद्ध है ''पुरुषार्थ ही इस दुनिया में सब कामना पूरी करता है। मन चाहा फल उसने पाया जो आलसी बनके पड़ा न रहा।'' योग दर्शन में महर्षि ने कहा ''न अतपस्विनो योग सिध्यति ''अर्थात् जो सजग रहते हुए पुरूषार्थ नहीं करते हैं उनको योग की सिद्धि प्राप्त नहीं होती हैं।

विश्व में जितने भी धनवान, बलवान, विद्वान, प्रवक्ता, शिल्पी, नेता, वैज्ञानिक, ऋषि मुनि आदि प्रसिद्ध व्यक्ति हुए हैं उनके जीवन को खोलकर पढ़ते हैं तो प्रायः मिलेगा कि उन्होने चेतनत्व को जानकर अपने सामर्थ्य को समझकर अपनी शक्तियों को पहचान कर, सतर्कता सावधानी से बिना किसी क्षण को नष्ट किए सतर्क पुरुषार्थ करके आगे बढ़ते गए, ऊपर उड़ते गए, गतिशील होते गए और प्रगति की चरण सीमा पार करके महा मानव, अतिमानव पद को प्राप्त कर गये। इसके विपरीत उसी रंग, रूप, आकार भार वाले व्यक्ति अपने स्वरूप को न जानकर पशुवत् जीवन को व्यतित करके जीवन लीला समाप्त कर जाते हैं।

सम्पादकीय ...

स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

जब से केन्द्र में भाजपा सरकार बनी है तभी से अयोध्या में श्री राम जी के मन्दिर बनाने की चर्चा जोर पकड़ रही है। विशेषकर जब से उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बने हैं तब से तो इस मांग ने बहुत जोर पकड़ लिया है क्योंकि योगी आदित्यनाथ समय-समय पर अपने प्रवचनों में राम मन्दिर को बनाने की बात करते थे। परन्तु उस समय की सरकार राम मंदिर बनाने की बात नहीं कहत थी, ऐसे नेताओं की खुले मंच पर भरपूर आलोचना करते थे।

परन्तु अब तो सौभाग्यवश यह शुभावसर मिला है अब केन्द्र व राज्य दोनों सरकारों की परीक्षा भी है, अत: इन दोनों सरकारों को साहस से काम लेना चाहिए। अयोध्या में राम जन्म भूमि पर मंदिर बनाने का विरोध करने वाले नेताओं को साम, दाम से अनुकूल करके मन्दिर बनाने का यत्न करना चाहिए। वास्तव में राम जन्म भूमि के पुण्य स्थान पर मन्दिर तो केवल प्रतीक रुप में रहे, परन्तु श्री राम जी के आदर्श जीवन की घटनाओं को बहुत सुन्दर ढंग से चित्र या मूर्तियों में दिखलाने का यत्न करना चाहिए। जिससे आने वाला व्यक्ति वह चाहे स्वदेशी या विदेशी प्रभावित होकर जाएं।

हमारे देश के नेताओं के मन में श्री रामचन्द्र जी का मन्दिर बनाने की सच्ची भावना नहीं है। यदि कोई भी नेता हृदय में सच्ची श्रद्धा रखकर बनाने का यत्न करेगा, तो कोई विशेष विरोध नहीं होगा। क्योंकि हमारे देश की केन्द्र सरकार में या प्रान्तीय सरकार में अधिकतर व्यक्ति आर्य (हिन्दू) संस्कृति से जुड़े हुएं है। इन नेताओं में से कोई भी नेता खुलकर राम मंदिर बनाने का विरोध नहीं कर सकता। जो राज नेता विरोध करेगा उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

क्योंकि श्री राम मानव मात्र के हृदय में छाया हुआ है। संसार के प्रत्येक देश में प्रत्येक कोने में लाखो व्यक्ति प्रतिदिन उठने से सोने तक सैकड़ो बार राम का नाम लेते है। आज भी संसार में सैकड़ों प्रकार की रामायण बनी हुई है। कई विदेशों एवं देश में रामलीला का मंचन अर्थात् श्री रामचन्द्र जी के जीवन को नाटक के माध्यम से दिखाया जाता है। इससे प्रतीत होता है कि श्रीराम का नाम करोड़ों लोगों के हृदय में छाया हुआ है। वैसे व्यक्ति राम मंदिर बनवाने

ऋषि उवाच

उस हेतु से परलोक अर्थात् परजन्म में सुख और जन्म के सहायतार्थ नित्य धर्म का–सञ्चय धीरे–धीरे करता जाय क्योंकि धर्म ही के सहाय से बड़े–बड़े दुस्तर दु:खसागर की जीव तर सकता है।

किन्तु जो पुरुष धर्म ही को प्रधान समझता जिसका धर्म के अनुष्ठान से कर्त्तव्य पाप दूर हो गया उसको प्रकाशस्वरूप और आकाश जिसका शरीरवत् है उस परलोक अर्थात् परमदर्शनीय परमात्मा को धर्म ही को शीघ्र प्राप्त करता है।

वेदोद्धारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

का राम के जीवन प्रदर्शन करने का विरोध नहीं करेगा। क्योंकि श्री राम का नाम तो लोगों के हृदय में छाया हुआ है।

अत: स्पष्ट है कोई भी व्यक्ति हृदय से राम मंदिर बनाने का विरोध नहीं कर सकता, राम मंदिर का विरोध केवल हवाई बात है अत: यह अवसर है भगवान ने यह शुभावसर दिया है भाजपा के नेताओं को इस अवसर का लाभ उठाकर श्री रामचन्द्र जी का भव्य मंदिर बनवाने का दुर्लभ अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

तथा इस राम मंदिर बनाने का शुभकार्य करके भारतीय, संस्कृति की रक्षा का पुण्य भी प्राप्त करना चाहिए। इस समय हमारे देश के हिन्दू धर्म से सम्बन्धित सभी मत या शाखाऐ इस शुभकार्य में सहयोग देना चाहती है। राम मंदिर का विरोध दिखावा या नाम मात्र का है आशा है अब उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री इस महत्वपूर्ण कार्य को करने का पुण्य प्राप्त करेगें।

महिला जगत् ...

कु. कान्ता आर्या

आज मौसम सुहाना है। ना गर्मी है ना सर्दी अत: माता मैत्रेयी जी सोनपुर ग्राम की कन्या और महिलाओं को उपदेश देने के लिए ठीक समय पर ग्राम की पंचायत में पहुँच गई, तब तक बहुत सी कन्याएं और महिलाएँ भी उपदेश सुनने के लिए अपना स्थान ग्रहण कर चुकी थी, माता जी के पहुचते ही कुमारी सुशीला माता जी को अल्पाहार कराके ले आई, तो सभी कन्या एवं महिलाओं ने खड़े होकर श्रद्धा पूर्वक माता जी का अभिवादन किया, माता जी ने भी अपना आसन ग्रहण करके सभी को बैठने का निर्देश दिया।

सभी के बैठते ही कुमारी नंदिता ने खड़े होकर नम्रता पूर्वक माता जी का अभिवादन करते हुए पूछा माता जी ऐसा क्या कारण है बहुत सी महिलाओं को आत्महत्या करनी पड़ती है या अनेक स्थान पर स्त्री के अभिभावक या पति आदि स्त्रियों की हत्या कर देते है। उसी प्रकार प्रतिदिन अनेक संतान वाली स्त्रियाँ भी अपने हृदय के प्रिय पुत्र-पुत्रियों को लेकर आत्महत्या कर लेती है। ये सब समाचार देख-सुन कर कई बार हम भी अपने जीवन से निराशा हो जाती है।

वैसे आपके सद्उपदेश से हमारी गाँव की अधिकतर कन्याओं को एवं महिलाओं को सुख, शान्ति कर्त्तव्य की प्रेरणा मिली है। अत: माता जी हमें ऐसा उपदेश दें, जिससे हमें तो शान्ति मिले ही हम दूसरो को भी अच्छे मार्ग पर चला सके। माता मैत्रेयी मनु जी महाराज ने सबसे पहले अपने ग्रन्थ मनुस्मृति में बहुत सुंदर उपदेश दिया है।

सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रयान्न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्। प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्म: सनातन:।।
भद्रं भद्रमिति ब्रूयाभ्दद्रमित्येव वा वदेत् शुष्कवैरं विवादं च न कुर्यात्केनचित्सह

अर्थात् :- सदा प्रिय सत्य दूसरे का हितकारक बोले, अप्रिय सत्य अर्थात् काणे को काणा न बोले, अनृत अर्थात् झूठ दूसरे को प्रसन्न करने के अर्थ न बोले।। १।। सदा भद्र अर्थात् सबके हितकारी वचन बोला करे शतुष्कवैर बिना अपराध किसी के साथ विरोध वा विवाद न करे। जो-जो दूसरे का हितकारी हो और कोई बुरा भी माने तथापि कहे बिना न रहे।

इसी प्रकार आप सभी बेटियों, माता, बहनों को अपने स्वभाव पर विशेष ध्यान रखना चाहिए, हर समय सत्य और मीठा बोले, नम्रता का व्यवहार करे, धैर्य और सहनशीलता को धारण करे, दूसरों के साथ आपका व्यवहार मीठास, मधुरता से भरा हो, तो आप सभी माता, बहनों को इसी जन्म में स्वर्ग मिल जाएगा, आशा है मेरी प्यारी बहने अपने परिवार में अपने जीवन में इस उपदेश को ग्रहण करके स्वर्ग का अनुभव करेगी घर परिवार को स्वर्ग एवं नर्क बनाना, मातृशक्ति के हाथ में है। इस बात को नहीं भुलना चाहिए। अस्तु अब समय हो गया है मुझे आश्रम के लिये निकलना है।

¤¤¤

मित्र उवाच

हमें हर कार्य करने से पहने यह जाँच लेना चाहिए कि क्या इसे करने से सबका हित होगा या नहीं। यदि व्यक्तिगत रुप से लाभ देते हुए भी कोई कार्य समाज के लिए अहितकारी है तो उसे नहीं करना चाहिए

चौ. मित्रसेन जी आर्य

गुरुकुल आश्रम आमसेना में नया प्रवेश प्रारम्भ

अब स्कूलों, कॉलेजों में तीव्रगति से चरित्रहीनता बढ़ रही है। छोटे-छोटे बालक भी वासना के जाल में फंसते जा रहे हैं। अत: इन कुसंस्कारों से देश के भावी बालक-बालिकाओं के चरित्र की रक्षा गुरुकुलों की आर्ष शिक्षा प्रणाली ही कर सकती है।

अत: जो सज्जन अपने होनहार पुत्र-पुत्रियों को चरित्रवान्, विद्वान्, बलवान, तेजस्वी बनाना चाहते हैं, जो वृद्धावस्था में अपना सहारा चाहते हैं तो गुरुकुल आश्रम आमसेना, आदर्श कन्या गुरुकुल आमसेना, आर्ष ज्योति गुरुकुल कोसरंगी (छ.ग.), परममित्र आर्ष गुरुकुल गेरवानी, रायगढ़ (छ.ग.) आदि में प्रवेश करा सकते हैं। गुरुकुल में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के आर्ष पाठ्यक्रम के साथ छ.ग. संस्कृत मण्डल तथा पुरी विश्वविद्यालय से भी परिक्षायें दिलायी जाती है। पढ़ाई के साथ औषध निर्माण, पैकिंग, कम्प्यूटर, कृषि, गौसेवा की भी क्रियात्मक शिक्षा स्वावलम्बी बनाने के लिये दी जाती है।

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9437070541/615, 8280283034, 7873111213

उत्कल साहित्य संस्थान गुरुकुल आमसेना द्वारा प्रकाशित हिन्दी पुस्तकें:-

01. सत्यार्थ प्रकाश	- 40.00	07. विष चिकित्सा	- 30. 00
02. खिलते फूल	- 8.00	08. कन्या और ब्रह्मचर्य	- 05.00
03. गीत कुञ्ज	- 10.00	09. ईश्वर कहां है ?	- 10.00
04. सच्चा सुखी कौन	- 10.00	10. सच्चा धर्म	- 05.00
05. विचित्र ब्रह्मचारी	- 05.00	11. दैनिक उपासना	- 10.00
06. वैदिकधर्म प्रश्नोत्तरी	- 15.00	12. योगासन एवं प्राणायाम	- 25.00

शास्त्र चर्चा

कामक्रोधाग्राहंवर्ती पञ्चेन्द्रियजलां नदीम्।

नावं धृतिमयीं कृत्वा जन्म दुर्गा पि संतर।

अर्थात् :- जीवात्मा में संसार रुपी नहीं भी है। इसमें पांचो इन्द्रियों के विषयों का विष भरा है। इसकी धारा में इन विषयों से सम्पृक्त काम एवं क्रोधरुपी मगरमच्छ भी निवास करते है। इस नदी के जलरुपी दुर्गो को धैर्य की नौका से ही पार किया जा सकता है।

अस्माल्लोकादूर्ह्व मनुष्यचाधो, महत्तमस्तिष्ठति ह्यन्धकरम्।

तद्वैमहामोहनमिन्द्रियापां, बुद्ध ब्रूह्यस्व मात्वां प्रलभते राजन्।।

अर्थात् :- इस मनुष्य लोक के ऊपर और इसमें नीचे गहन अंधकार है। वहां इन्द्रियों का ज्ञान नहीं रहता। इनको भली भांति जानकर इनसे बचने का प्रयत्न करना चाहिए मनुष्य लोक बड़े भाग्य से मिलता हे, इसलिए इसमें पुण्य कर्म करते रहना चाहिए।

रथ शरीरं पुरुषस्यराजन्नात्मः, नियेतेन्द्रियाण्यस्य चाश्वाः।

तैरप्रमत्तः कुशली सदश्वैर्दान्तैः, सुखं याति रथीव धीरः।।

अर्थात् :- हे! राजन मनुष्य का शरीर रथ है, आत्मा इसका सारथी और इन्द्रिया घोड़े है। इनको वश में करके कुशल सारथी धैर्य के साथ अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है।

शुभं वायदि वापायं द्वेष्यं वायदि वा प्रियम्। अपृष्टस्तस्य तद्ब्रूयाद्यस्य नेच्छेपराभवम्।।

अर्थात् :- मनुष्य को जो व्यक्ति प्रिय है और वह जिसकी पराज्य नहीं चाहता, उसके प्रति उसका कर्त्तव्य यह है कि वह उसे निस्पक्ष भाव से हानिप्रद या कल्याण कारी बातों को एक-एक करके स्पष्ट रुप से बता दे। उसको प्रसन्न करना किसी भी दृष्टि में उचित से उचित नहीं है। असत्य का सहारा लेकर कभी किसी का कल्याण नहीं किया जा सकता है।

एकः पापानि कुरुते फलं भुङ्क्ते महाजनः। भोक्तारो विप्रमुच्यते कर्त्ता दोषेज लिप्यते।

अर्थात् :- कर्मफल की वृद्धि की गति वदी विचित्र है। यह गुणात्मक अनुपात में बढ़ता है। एक व्यक्ति पाप करता है, तो उसका फल उस पर आश्रित सभी व्यक्तियों पर पड़ता है। और यह पीढ़ियों तक पिछा नहीं छोड़ता शेष लोग तो इसके अप्रत्यक्ष फल को भोगते है। परन्तु पाप करने वाले को प्रत्यक्ष ही भोगना पड़ता है। इससे छुटकारा प्राप्त करना सम्भव नहीं है।

विदुर नीति से साभार

शक्ति का ह्रास क्यों होता है?

डॉ. रामचरण महेन्द्र

यदि जीवन-यापन ठीक तरह किया जाय तथा जीवन-तत्त्वों को ह्रास से बचाया जाय, तो मनुष्य दीर्घकाल तक जीवन का सुख लूट सकता है। प्रत्येक व्यक्ति को उन खतरों से सावधान रहना चाहिए, जिनसे जीवन-शक्ति का ह्रास होता है। सर्वप्रथम मनुष्य की शक्ति का ह्रास करने वाली चीज अधिक भोग-विलास है। संसार के समस्त पशु-पक्षियों की प्रजन-शक्ति अत्यन्त परिमित है। वे केवल आनन्द, क्षणिक वासना के वशीभूत होकर रमण नहीं करते, विशेष ऋतुओं में ही प्रजनन-कार्य होता है। प्रकृति उन्हे विवश करती है, तब उनका गर्भाधान होता है। आज के मानव-समाज ने नारी को केवल वासना-तृप्ति का साधनमात्र समझ लिया है। पति-पत्नि के संयोग की मात्रा अनियमित हो रही है। हम संतानोत्पत्ति का उद्देश्य, आदर्श तथा प्रकृति का आदेश नहीं मान रहे हैं। फलतः समाज में आयुष्य-हीन, अकर्मण्य, निकम्मे बच्चे बढ़ रहे हैं। इन्द्रियों की चपलता, कामुकता बढ़ रही है। अधिक भोग-विलास से मनुष्य निर्बल होते जा रहे हैं। कामुक और कामुकता में लगे रहने वाले जीव या व्यक्तियों के बच्चे कभी बलवान्, आचारवान्, संयमी, धीमान्, विचारवान नहीं हो सकते। प्रत्येक वीर्य का विन्दु शक्ति का विन्दु है। एक विन्दु का भी ह्रास शक्ति को नष्ट करना है। यदि शक्ति, जीवन तथा आरोग्य की रक्षा करना चाहते हैं तो भोग विलास से दूर रहिये।

शक्ति का ह्रास अधिक दौड़-धूप से होता। आधुनिक मनुष्य जल्दी में है। उसे हजारों काम है। प्रातः से सायंकाल तक वह व्यस्त रहता है। उसका काम ही जैसे समाप्त होने में नहीं आता। बड़े नगरों में दौड़-धूप इतनी बढ़ गयी है कि मनुष्य को दम मारने का अवकाश नहीं मिलाता। वह क्लबो-होटलों में गपशप करता है, आफिस में कार्य करता है, घर के लिए सामान लाता है, बाल-बच्चे को मदरसे भेजता है, अस्पताल से दबाई लाता है। यदि आप व्यापारी हैं तो व्यापार के चक्कर में प्रातः से सायंकाल तक दौड़-धूप करनी है। आज के सभ्य व्यक्ति को शान्ति से बैठकर मन को एकाग्र करने तक का अवसर नहीं मिलता। संसार के कोने-कोने से अशान्ति और उद्विग्नता की चिल्लाहट सुनाई दे रही है। चित्त की चचंलता इतनी बढ़ती जा रही है कि हम क्षुब्ध एवं संवेगशील बन रहे हैं। इस दौड़-धूप में एक क्षण भी शान्ति नहीं। यदि हम इसी उद्विग्न एवं उत्तेजित अवस्था में चलते हैं,

तो जीवन में कैसे आनन्द, प्रतिष्ठा एवं शान्ति पा सकते हैं। हमारे चारों और का वायुमण्डल जब

विक्षुब्ध है, तो आत्मा की उच्चतम शक्ति क्योंकर सम्पादन कर सकते हैं। जो व्यक्ति शक्ति–संचय करना चाहते हैं, उन्हे चाहिए कि वे अधिक दौड़–धूप से बचें, केवल अर्थ–उत्पादन को ही जीवन का लक्ष्य न समझें, शान्ति दायक विचारों में रमण करें। जिस साधक के हृदय में शान्ति देवी का निवास है, जिसके हृदय में ब्रह्मनिष्ठा एवं सन्तोष है, उसकी मुखाकृति दिव्य आलौक से चमकती है। जो ब्रह्मविचार में लगता है, वह अपने–आपको निर्बलता, प्रलोभन, पाप से बचाता है। शक्ति के ह्रास का तीसरा कारण है अधिक बोलना। जिस प्रकार अधिक चलने से जीवन क्षय होता है, उसी प्रकार अधिक बोलने, बातें बनाने, अधिक भाषण देने, बड़बड़ाने, गाली–गलौज देने, चिढ़कर काँव–काँव करने से फेफड़े कमजोर बन जाते हैं। पुनः–पुनः तेज आवाज निकालने से फेफड़ों का निर्बल हो जाना स्वाभाविक है। यही नहीं, गले में खराश तथा खुश्की से खाँसी उत्पन्न होती है। खाँसी बनी रहने से क्षय रोग होकर मनुष्य मृत्यु का ग्रास होता है। प्रायः देखा गया है कि व्याख्याता, लेक्चराल, पतले–दुबले हो जाते हैं। यह शक्ति के क्षय का प्रत्यक्ष लक्षण है। अधिक बोलने से शारीरिक शक्ति का ह्रास अवश्यम्भावी है। यह अपनी शक्ति का अपव्यय है। अधिक बोलने की आदत से मनुष्य बकवासी बनता है, लोग उसका विश्वास नहीं करते, ढपोरशंख करते हैं। वह प्रायः दूसरों की भली–बूरी–खोटी आलोचना करता हे, अनावश्यक बातें बनाता है, निन्दा करता है, अपनी गम्भीरता खो बैठता है। प्रायः ऐसा करने वालों का आदत कम हो जाता है। शक्ति को अपव्यय से बचाने की इच्छा रखने वालों को चाहिए की मितभाषी बनें, मिष्टभाषी बनें। कम बोलें, किन्तु जो कुछ बोलें, वह मनोहारी और दूसरे तथा अपने हृदय को प्रसन्न करने वाला हो, सारयुक्त हो, शब्द–योजना शुन्दर हो, प्रेम तथा आनन्द का, आदर और स्नेह का परिचायक हो, शक्ति–संचय के लिये मितभाषी बनिये। अध्यात्म–चिन्तन, पठन–पाठन, अध्ययन, मौन, लिखना मितभाषी बनने के सुन्दर उपाय हैं।

बाल संसार

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

आज बाल संसार के सदस्यों के सत्संग का दिन था। मौसम भी ठीक था गर्मी या वर्षा ऋतु समाप्त होकर शरदऋतु प्रारम्भ होने जा रही थी। इस ऋतु में प्राय: अधिकतर मनुष्यो का स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

अत: बाल संसार के बहुत से सदस्य स्वामी जी का उपदेश सुनने के लिए पहुंच गये थे। बाल संसार के वरिष्ठ सदस्य सोमदत्त ने खड़े होकर स्वामी जी के चरण स्पर्श कर एक प्रश्न पूछने की अनुमति मांगी। स्वामी जी की स्वीकृति (आज्ञा) पाकर सोमदत्त ने कहा आजकल के युवको की स्मरण शक्ति या स्मृति इसे ग्रामीण भाषा में याददास्त भी कहते है। यह कम होती जा रही है। हमारी स्मरण शक्ति या बुद्धि कैसे बढ़े हम जो भी पाठ पढ़े, वह जल्दी याद हो जाए, फिर उस पाठ को शीघ्र ना भूले उसका क्या उपाय हो सकता है?

स्वामी चैतन्यमुनि- प्रिय युवको मनुष्य के ज्ञान की वृद्धि करने और संसार के ज्ञान को आगे बढ़ाने वाली शक्तियों में मस्तिष्क की स्मरण शक्ति महत्त्वपूर्ण है। अन्य जीवों की अपेक्षा मनुष्य में स्मरण शक्ति विशेष विकसित रुप में पायी जाती है। ज्ञान भण्डार को बढ़ाने में इसका प्रमुख स्थान है। लेखको, इतिहासकारो, वक्ताओं, ऋषि-मुनियों का ज्ञान उनकी स्मृति में संचित रहता है। जब पुस्तके नहीं थी तो अध्यापकों का मस्तिष्क ही पुस्तके थी और उनकी स्मरण शक्ति के कारण ही उनका इतना मूल्य था। जो कुछ वे उच्चारण करते थे, उसे शिष्य को अपनी स्मृति में धारण करना पड़ता था। पुस्तकों के प्रचार से स्मरण शक्ति निर्बल हो गयी है फिर भी अनेक व्यक्तियों में अद्भूत स्मरण शक्ति पायी गयी है। और आज भी पायी जाती है।

अभी भी आर्य समाज के महान् पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी को कौन नहीं जानता? वे ऋषि दयानन्द के आदर्श शिष्य थे। उनकी ईश्वर के प्रति भी असीम श्रद्धा थी। अंग्रेजो के राज्यों के समय वे पहले व्यक्ति थे जो साइन्स कॉलेज में प्रोफेसर बने थे। उन्होंने अपने धार्मिक ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश को छोड़कर परीक्षा सम्बधी कोई भी पुस्तक दूसरी बार नहीं पढी, वे संस्कृत, अंग्रेजी, हिन्दी, फारसी, आरबी, उर्दू आदि भाषाओं के विद्वान् लेखक एवं कवि थे।

इसी प्रकार आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती बुद्धि में बहुत

तेज थे उनको सभी धर्मों के हजारों ग्रंथ कण्ठस्थ थे, विशेष कर वे वैदिक साहित्य के अद्भूत विद्वान् थे उनको वैदिक साहित्य के अधिकतर ग्रंथ कण्ठस्थ थे।

स्वामी दयानन्द जी के गुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द जी अंधे थे उनके चरम चक्षु नहीं थे, परन्तु उनको संस्कृत साहित्य के हजारो ग्रंथ कण्ठस्थ थे।

८० साल की अवस्था में जब आदमी के पाव कबर में होते है उस आयु में भी उन्होंने व्याकरण महाभाष्य कण्ठस्थ किया था।

अस्तु! यदि आप लोगों अपनी बुद्धि को, स्मरण शक्ति को स्थिर रखकर तेज करना चाहते है, तो आप लोग की मन को एकाग्र करने का यत्न करना चाहिए इसलिए ईश्वर का अटूट विश्वास उसका ध्यान "**ओ३म्**" या गायत्री महामंत्र का चिन्तन या जाप तथा प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए।

यज्ञ-चक्र

बच्चा छोटा हैं,असमर्थ हैं। अब वह बढ़ने लगा। किन चींजों से बढ़ा। अन्न,जल,वायु,पृथिवीं की पैदावार खाकर,उसे अग्नि पर पकाकर अब बड़ा होकर शरीर से कमाने लगा, सूर्य की रोशनी से महल बनाया, आराम के लिए घोड़ा गाड़ी, नौकर, चाकर रखे-अपने सुख के लिये, किन्तु उसके आराम और सुख का हेतु उसकी कमाई और कमाई का साधन शरीर और शरीर को बढ़ाने वाले प्राकृतिक देव ही हैं। वे उसके उपकारी हुए। अपने उपकारियों के प्रति कृतज्ञता प्रकाशित करना उनका ऋण उतारना है, और उपेक्षा करना कृतघ्न बनना और ऋणी होना है। जनता के लिए कुछ आत्म बलिदान किया अच्छी संतान पैदा कर दी, तो पिता का ऋण चुक गया, वायु-जल शुद्ध कर दिये तो देव-ऋण चुक गया, किसी को पढ़ा दिया या उपदेश कर दिया तो ऋषि ऋण चुक गया। इसी का नाम यज्ञ-चक्र है।

वीतराग महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

स्वर्ण जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में स्नातक परिचय

श्री मनोज कुमार विद्यार्थी :- झारखण्ड प्रान्त के अनुन्नत गुमला जिले के तपकरा गांव में पिता श्री रामकुमार मिश्र एवं माता श्रीमती सुरेखा देवी की कोख से ०६/०२/१९७९ को आपका जन्म हुआ। ६ फरवरी सन् १९८८ को श्री देशपाल जी ने गुरुकुल में प्रवेश कराया। प्रारम्भ से ही माता पिता के संस्कार आपको प्रभावित किये हुए हैं। आपकी माताजी सती साध्वी और सेवाभावी महिला हैं। यही संस्कार आपके जीवन में कूट-कूटकर भरे हुए हैं। विद्याविलासी आपने शास्त्री तथा व्याकरणाचार्य की उपाधि महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय से प्राप्त कर अब आप ऋषि मिशन के कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं। आपने सन् २००२ में नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर समाज को अपना जीवन अर्पित कर दिया। आप सात्विक सरल और सेवाभावी परिश्रमी नवयुवक हैं। किसी भी कार्य को बढ़ी लगन और श्रद्धा के साथ करते हैं। वर्तमान आप स्वतन्त्र कार्य कर रहे हैं।

श्री उमेशचन्द्र मनस्वी :- उड़ीसा के आदिवासी बहुल अनुन्नत कन्धमाल जिला के गुडरिकिया नामक एक छोटे से गांव में १५ मई १९७५ को पिता श्री सोमनाथ प्रधान व माता श्रीमती प्रियवती के यहां आपका जन्म हुआ। पांचवी कक्षा उत्तीर्ण होने के उपरान्त आर्य विचारों से प्रभावित आपके पिता ने १५ जुलाई १९८९ को गुरुकुल में प्रवेश कराया। आप उत्साही, श्रद्धालु, कर्मठ, मननशील, धार्मिक, सेवाभावी नवयुवक हैं। आपने आचार्य चरणों में रहकर विधिवत् मध्यमा, शास्त्री उत्तीर्ण कर व्याकरणाचार्य भी अच्छी योग्यता से उपाधि प्राप्त की। आपने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर पूरे फुलवाणी को गौरवान्वित किया है। सारे आर्यजन आपसे प्रभावित हैं। आपका व्यक्तित्व दूसरों को प्रभावित और आकर्षित करने वाला है। गुरुकुल में अध्ययन अध्यापन के साथ गुरुकुल के फार्मेसी निर्माण विभाग की जिम्मेदारी सम्भाले हुए हैं। गुरुकुल को आप पर गर्व है।

श्री दिलीप कुमार जिज्ञासु :- आपका जन्म छत्तीसगढ़ प्रान्त के महासमुन्द जिले में पलसापाली नामक एक लघु ग्राम में अध्यापक पिता श्री गण्डेश्वर प्रधान एवं माता श्रीमती नलिनी देवी के यहां १४ जुन १९८२ को हुआ। ऋषि भक्त आर्य निष्ठ इनके ज्येष्ठ भ्राता ने आपको महाविद्यालस गुरुकुल आश्रम में ०४/०७/९९९५ को नवमी कक्षा में आपको प्रविष्ट कराया। विद्याविलासी आप मेधावी, ओजस्वी, कर्त्तव्यनिष्ठ, श्रद्धालु, भावुक सेवाभावी नवयुवक हैं। अप्रैल २००२ में शास्त्री कक्षा में विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्तकर गुरुकुल को गौरवान्वित किया। आपको विश्वविद्यालय से स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ ही साथ में आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई से बालपुरस्कार का भी सम्मान प्राप्त हुआ। मीमांसा के अतिरिक्त अन्य पांच दर्शनों को भी आपने कण्डस्थ कर सुनाया है। आपकी कुशाग्र बुद्धि के कारण लोग प्रभावित हैं। आपका सारा परिवार आर्यसिद्धान्तों में एकनिष्ठ है।

क्रमशः

बालक को दण्ड कैसे दें?

आचार्य मनुदेव वाग्मी

यदि बालक में आरम्भ से ही आज्ञा पालन का स्वभाव है तो दण्ड कोई लाभदायक नहीं है। यदि ध्यान दिया जाय, तो दण्ड देने की आवश्यकता यह बतला देगी, कि अब दण्ड देने से कुछ अधिक लाभ होने की सम्भावना नहीं है। किन्तु फिर भी दण्ड एक आवश्यक पदार्थ है। जिस प्रकार वैद्य रोगी के प्रति क्रोध नहीं करता इसी प्रकार आपको भी दण्ड के कारण से क्रोधित न होना चाहिए यदि क्रोध पूर्वक दण्ड दिया जाएगा, तो मानों माता-पिता अपना (द्वेष) निकाल रहे हैं। इसका प्रभाव चरित्र गठन पर कुछ भी न पड़ेगा। मानलो कि छोटा बालक केवल शरारत के कारण रो रहा है, और इतनी अधिकता से रो रहा है। कि उसके स्वास्थ्य बिगड़ जाने की सम्भावना है तो उसे पकड़ कर उल्टा लिटा पीठ में दो-चार तमाचे धीरे से लगा दो। जरा अधिक रोकर वह सो जाएगा। यह इलाज छोटे बालक का है। बालक को बंद और अंधेरे कमरे में बंद कर देना या रोटी न देना यह अत्यंत बुरे दण्ड हैं। परितोषिक में मिठाई आदि खाने की वस्तुओं को न देना चाहिए पहली अवस्था में भूखे रहने से स्वास्थ्य बिगड़ने और इसी अवस्था में जीभ से चटोरा होने का भय रहता है। बालक को अंधेरे कमरे में बंद करके अंधेरे से डरना नहीं सिखलाना चाहिए। वर्ना उनके हृदय से अंधेरे का भय निकाल देना चाहिए। बहुत बाद देखा गया है कि जवान मनुष्य भी बहुतेरे अंधेरे में नहीं सोते अथवा उस प्रकार सोने से डरते है। इसका कारण वहीं बचपन में अंधेरे वाला डर ही होता है। बालकों को चिराग बंद करके सुलाना चाहिए यह दंड विधान ठीक नहीं है।

प्रथम तो इस बात का डर ही भयानक बात है। यहाँ तक की पढ़ाते समय भी डर न दिखलाना चाहिये शरीर के समस्त तत्वो में मन अत्यन्त प्रबल हो जाया करता हैं। इसी से प्रमाद से देश में इतने कायर डारपोक और झूठे मनुष्य दृष्टि गोचर होते हैं। जिसके हृदय में भय स्थान पाये हुए है वह न तो बहादुर और न सच्चा हो सकता है जरा-जरा सी बात में बालकों के हृदय में डर डाला जाता है बालक को जहाँ कुछ भी समझने की शक्ति हुई, वहीं भय का पाठ पढ़ा दिया जाता है। भले प्रकार याद रखाना चाहिए कि जिस प्रकार सुकृति का मूल आज्ञा पालन है, उसी तरह कुकृति का मूल भय है। निडरता ही के कारण से नैपोलियन बोनापार्ट ने संसार की जड़ हिला दी थी, वह एक सामान्य मनुष्य ही था, यदि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती में भय होता, तो वह क्या कर सकते थे? भय कमी नापने कृतघ्नता और चरित्र नाश का मूल है। उससे कुछ भी न हो सकेगा। निर्भय मनुष्य ही संसार का एक क्षेत्र अधिपति हो सकता है। वह काल से भी नहीं डरता मिथ्याभाषण अपकार कृतघ्नता आदि पापों से उसे स्वाभाविक घृणा होती है।

एक आर्य युवक की अरब देशों की रोमांचकारी यात्रा

क्रमागत..... संयोग से तीन अरब मुसाफिर भी उसी दिशा में जा रहे थे। उनसे उसका साथ हो गया। रास्ता बिल्कुल बियाबान था। पैड़ पौधों का कहीं नाम-निशान भी नहीं था। आदमी की तो बात ही क्या! पशु-पक्षी भी नहीं दिखायी पड़ते थे। साथ का पानी भी दो ही दिन में समाप्त हो गया था। तीसरे दिन प्यास के मारे चारों साथी बेचैन हो गये। एक तो जमीन पर लेट गया और मर गया। दो साथी एक ओर बेतहाशा भाग निकले। रुचिराम जी कुछ दूर और चले, पर चल न सके। एक जगह कुछ लकड़ियाँ मिल गयीं। वहीं डेरा डाल दिया और लकडियाँ जला कर उसी के पास सो गये। सवेरे उठे, तो कतर को जाने वाला एक काफिला मिला। ये भी काफिले के साथ कतर वापिस गये। रास्ते में दोनों अरब साथियों की लाशों बालू पर पड़ी मिली।

दश दिन कतर में ठहरकर रुचिराम जी समुद्र के किनारे-किनारे चल कर जोपाइन, खोर, जखीरा, फिहरत, गास्यत, मफीयर और दमदम होते हुए लखबर पहुंचे। इसमें पन्द्रह दिन लगे। एक स्थान पर समुद्र के मध्य में उन्हे एक भव्य नगर दिखाई पड़ा। वह बहरीन का टापू था। एक नाव उधर जा रही थी, एक रयाल (सिक्का) भाड़ा देकर वे भी उप पर जा चढ़े। पर नाव वाले राह भूल गये और चार दिन-चार रात समुद्र में ही भटकते रहे। नाव में खाना और पानी एक ही दिन के लिए था, इससे सब यात्री भूख प्यास के मारे मृतप्राय हो गये थे। पांचवे दिन बहरीन पहुंचे, तब जान-में-जान आयी।

बहरीन टापू में कुछ हिन्दू बसे हुए मिले। वहाँ बाजार में हर वक्त एक सौ अरब सिपाहियों का पहरा रहता था। रात में आठ बजे के बाद किसी को घर से बाहर निकलने की आज्ञा नहीं थी। केवल हिन्दू लोग हाथ में लालटेन लेकर बाहर जा-आ सकते थे। मुसलमानी देश में हिन्दू धर्म का यह सम्मान रुचिराम जी के लिए कम हर्षदायक नहीं था। दो हजार वर्ष से बसे हुए हिन्दुओं ने अपने धर्म की उच्चता अरबों के हृदयों में अंकित कर दी थी।

रुचिराम जी लखबर से अलहसा और अलहसा से पन्द्रह दिनों में रयाज पहुंचे। रयाज से संध्या समय वहां के सुलतान अबदुल-अजीज इब्न-सऊद मोटर पर सैर को निकले थे। उन्होने उनको देख लिया, बुलाया और परिचय पूछा, फिर अपने गुलाम के साथ शाही महल में भेज दिया और दूसरे दिन दस बजे दरबार में आने की आज्ञा दी। **क्रमशः**

प्रेरणाप्रद कहानी

दूसरों से शिक्षा लें

- संग्रहकर्ता -
आचार्य मनुदेव वाग्मी

एक कहावत है कि आगे वाला गिरे तो पीछे वाला होशियार हो जाए। जो बुद्धिमान होते हैं वे दूसरों के हालात देखकर शिक्षा ले लेते हैं। यदि हम भी चाहें और अपने ज्ञानचक्षु खुले रखें, तो हम कदम-कदम पर शिक्षा ले सकते हैं, दूसरों का परिणाम देखकर नसीहत ले सकते हैं क्योंकि प्रत्येक शिक्षा खुद ही अनुभव करके ग्रहण की जाए यह जरा मुश्किल काम है। आग से हाथ जल जाता है यह हमने सुना है और जाना है तो अब खुद हाथ जला कर देखने की जरुरत नहीं। सांप के काटने से मृत्यु हो जाती है इसका अनुभव करने लिए सांप से कटवाना जरुरी नहीं। लिहाजा जीव बुरे कामों के बुरे परिणाम दूसरे भोग रहे हैं उन्हें देखकर उन कामों को न करने की शिक्षा ग्रहण कर लेना चाहिए। जो दूसरों को गिरते देखकर सम्भल जाते हैं वे व्यक्ति बुद्धिमान हैं।

एक माँ अपने बच्चे का एडमीशन स्कूल में कराने के लिए बच्चे को लेकर स्कूल पहुंची। दाखले की खाना पूर्ति हो जाने पर वह बच्चे को लेकर क्लास टीचर के पास पहुंची। बच्चे के स्वभाव के विषय में क्लास टीचर को समझाते हुए उसने कहा- मास्टर जी, मेरा बच्चा बहुत ही कोमल स्वभाव का है, संवेदनशील और तेज दिमाग वाला है। इसे मारना तो क्या, कभी इसे डांटने की भी जरुरत नहीं पड़ेगी फिर भी अगर कभी ऐसी स्थिति हो भी जाए तो आप इस डांट कर पड़ौस के बच्चे को ही डांट देंगे तो भी यह शिक्षा प्राप्त कर लेगा।

मधुमेह ?

एक मान्यतम और सुरक्षित आयुर्वेद औषधि

बसंत कुसुमाकर रस

असली स्वर्ण भस्म और अन्य अमूल्य द्रव्यों से बनाया गया बसंत कुसुमाकर रस मधुमेह में होनेवाले शारीरिक दौर्बल्य, थकावट, अनिद्रा, स्मृति की कमी एवं अन्य उपद्रवों को दूर करते हुए मधुमेह पर नियंत्रण करता है। मधुमेह में मधुमेहान्तक रस भी बहुत उपयोगी है।

निर्माता एवं विक्रेता गुरुकुल आश्रम आमसेना, नुआपड़ा (ओडिशा)

सुख का आधार संतोष

१. एक महापुरुष का वचन है कि तृष्णा की भूख को संतोष आकर तृप्त करे अथवा मौत। इस बीमारी का तीसरा कोई उपचार नहीं।

२. संतोष वह खजाना है, जो गरीब को शाह बना देता है। संतोष रहित बादशाह भी भूखा रहता है।

३. हे बुद्धिमान! यह पहेली नहीं समझते कि चने के दाने में प्रकृति ने आदि से दो भाग क्यों रखे हैं? इसलिए कि सृष्टि बाँट करके खाना सीखे और संतोष का पाठ प्राप्त करे।

४. दुनिया में अधीनता जैसी कोई आपदा नहीं है किन्तु मनुष्य को अधीन कौन करता है? यही कम्बख्त इच्छा।

५. जो पारितोषिक के लोभ पर सेवा का कार्य करता है, वह अच्छा है किन्तु जो प्रेम में मग्न होकर सेवा करता है, उसके समान कोई नहीं।

६. चाहे किसी को कुबेर का खजाना मिल जाय तो भी तृष्णा बंद न होगी। गुरु नानकदेव जी ने सत्य कहा है कि ''बुखिया बुख न उतरे, जे बिना पुरियां भार'' अर्थात् ''तृष्णा जैसी भूख नहीं और संतोष जैसी तृप्ति नहीं।''

७. तृष्णा है अग्नि और दुनिया के पदार्थ हैं लकड़ियाँ। किसी को जितने अधिक पदार्थ मिलते है, उतनी उसकी तृष्णा-अग्नि धधकती है।

८. तृप्त का चिन्ह कौन सा है? जो थोड़े से थोड़े पर संतुष्ट रहे, वह तृप्त है।

९. विशाल दृष्टि से देखा जाय तो कमी ही कमी रहेगी। फिर क्यों न हमेशा विशाल दृष्टि रखी जाय।

१०. सौंदर्य देखो तो ऐसे देखो कि एक बार देखने से इन्द्रियों की तृप्ति हो जाय।

स्वाद लो तो इस प्रकार लो कि सभी इन्द्रियों को हमेशा के लिए तृप्ति आ जाय।

सुगंध इस प्रकार लो कि सुगंध से दिमाग हमेशा के लिए पूर्ण हो जाय।

११. जो एक कण को बहुत समझता है, उसके पास सुख की कमी नहीं रहेगी। भाग्य उसके बड़े समझने चाहिए, जो थोड़े पर प्रसन्न रहकर कण से भण्डार बनाना जानता है।

१२. इच्छा की पूर्ति से तो इच्छाएं और भी बढ़ती जाएंगी। इच्छाओं के त्याग से तृप्ति होगी। जिसे तृष्णा लगी हुई है, वह धनवान भी निर्धन है और जो तृप्त है, वह निर्धन होते हुए भी धनवान है।

१३. हे बुद्धिमान, तृप्ति तो दिल का गुण है। वस्तुओं के मिलने न मिलने से तृप्ति का क्या सम्बंध यदि पदार्थों की प्राप्ति पर तृप्ति का आश्रय हो तो अमीरों को लोभ का रोग क्यों लगे?

१४. हे हृदय! तृप्ति का गहना हमेशा पहन ले उसके सौंदर्य से संसार सम्मान मिलता है और परलोक में परम पद प्राप्त होता है।

■ ■ ■

वर्षा ऋतु की दिनचर्या एवं आहार व्यवहार

संसार में हमारा देश सबसे सौभाग्यशाली है जहां वर्ष भर में क्रमशः छः ऋतुएं आती है। परन्तु इन छः ऋतुओं के तीन भेद है जैसे- ग्रीष्म ऋतु, वर्षा ऋतु, शीत ऋतु इन तीन ऋतुओं का मनुष्य पर ही नहीं प्राणिमात्र पर भी विशेष प्रभाव पड़ता है। परन्तु हम मनुष्य ही इन ऋतुओं का विशेष प्रभाव अनुभव करते हैं।

अब ग्रीष्म ऋतु बीत गई है। प्रावृट् और वर्षा ऋतु आ गई है इस ऋतु में दिनचर्या कैसी की जाए इसी का संक्षिप्त वर्णन इस लेख में लिखा गया है।

प्रावृट् ऋतु (आषाढ़, श्रावण)

इस ऋतु में ग्रीष्म ऋतु की संचित वायु कुपित होती है, इस वास्ते इस मौसम में वायु नाशक आहार विहार आदि सेवन करने चाहिए।

हितकारी आहार-विहार

प्रावृट् काल में मीठे, खट्टे और नमकीन रसों का सेवन करना, सिवाया दूध पीना, घी, तेल जौ, सॉठी चावल गेंहू पूराने शाली चावल और दही आदि पथ्य है। जहाँ तेज हवा न हो ऐसे स्थान में अच्छे पलंग पर कोमल विस्तर विछवा कर सोना उत्तम है। यहाँ हमने प्रावृट् ऋतु के आहार-विहार आदि संक्षेप में लिखे हैं। आगे वर्षा में जो अपनी प्रकृति के अनुकूल हो वह भी इस मौसम में सेवन करने योग्य है।

अपथ्य आहार-विहार

स्वास्थ्य रक्षा से साभार

इस मौसम में वर्षा का जल नदी का पानी रूखी और गर्म चीजें छाछ धूप मेहनत दिन में सोना मैथुन करना और जल में स्नान ये सब कतई त्यागने योग्य है।

वर्षा ऋतु

सुश्रूत संहिता में लिखा है- वर्षा में मनुष्य के शरीर गीले रहते हैं, इससे अग्नि मन्द हो जाती है और सीली हवा के कारण वात आदि दोष कुपित हो जाते हैं। चरक में लिखा है- वर्षा काल में वर्षा होती है जल का अम्लपाक होता है और पृथ्वी से सील के अबखरे उठते हैं इस कारण इस मौसम में प्राणियों का अग्नि- बल क्षीण होता जाता है। और वातादि तीनों दोष कुपित हो जाते हैं अतएव वर्षा काल में सर्व त्रिदोष- नाशक विधियों का अनुष्ठान करना चाहिए।

वर्षा ऋतु में अग्नि मन्द हो जाती है इससे इस मौसम में लघुपाकी- हलके भोजन पान करना लाभदायक है। इस मौसम में कभी सर्दी कभी गर्मी और कभी वसन्त का सा समय वर्तने लगता है। इस वास्ते इस मौसम में खाना-पीना और पोशाक आदि समयानुसार बदलना अच्छा है। इस मौसम में भीगने

से जो क्लेश होता है उसकी शान्ति के लिये कडवे कसैले और चरपरे रस सेवन करना गर्म-गर्म और अग्नि दीपन करने वाले भोजन करना और विशेष करके पतले रूखे और चिकन पदार्थों को न खाना बहुत ही अच्छा नियम है, इस ऋतु में हवा और बादलों का जोर होने और पानी का शीतलता के कारण शाक-पात फुल बगैर पित और जलन पैदा करते हैं। इसलिए इस मौसम में अधिक परिश्रम न करना चाहिए लेकिन परिश्रम आदि को बिलकुल छोड़ देने से अग्नि और भी मन्द हो जाती है। जमीन से एक प्रकार की भू-वाष्प जमीन की भाप यानि गैस निकलती है। उससे शरीर की रक्षा करनी चाहिए जमीन पर सोने से भू-वाष्प मनुष्य के शरीर में प्रवेश कर जाती है। इसलिए मकान की ऊपरी मंजिल के कमरों के शरीर में प्रवेश कर जाती है। इसलिए भारी कपड़ा ओढ़ कर सोना चाहिए।

गुरुकुल आश्रम आमसेना के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव पर हार्दिक निमंत्रण

इस समय गुरुकुल आश्रम आमसेना का आर्य समाज के गुरुकुलों एवं शिक्षण संस्थानों में विशेष स्थान है इस गुरुकुल में आर्ष ग्रंथो का अध्यापन मात्र नहीं होता अपितु देश धर्म के लिए समर्पित होने वाले उच्चकोटि के त्यागी, तपस्वी विद्वान् भी तैयार किए जाते है। इस गुरुकुल से निकले स्नातक सारे देश में फैल कर विद्या एवं धर्म का प्रचार कर रहे हैं।

गुरुकुल आश्रम वासियों की इच्छा है कि इस अवसर पर सारे देश के पूज्य साधु, महात्मा, सन्यासी वैदिक धर्म के उच्चकोटि के विद्वान् इकट्ठा होकर आर्य जगत् को नया मार्ग दर्शन करे। क्योंकि यह संस्था किसी एक पक्ष की नहीं, अपितु वैदिक धर्म के लिए समर्पित त्यागी, तपस्वी, कर्मठों के तपस्थली है।

सच्चा सुखी कौन ?

उत्कल साहित्य द्वारा प्रकाशित

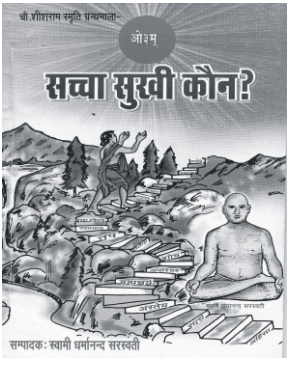

जीवन में सच्चा सुख कैसे मिले ?
इस विषय में उच्चकोटि के योगी सिद्ध महात्माओं के विचार क्या हैं ?
कौन सा कार्य करने से जिनमें सच्चा शांति मिलेगी
इत्यादि विषयों पर पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी ने अनेक महात्माओं के उपदेशों का संग्रह किया है ।

इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़ें ।

प्रकाशक : गुरुकुल आश्रम आमसेना , खरियार रोड़ , नुआपड़ा (ओडिशा) ७६६१०९

उपासना की पूर्णता

महात्मा आनन्द स्वामी

ज्ञान, कर्म एवं भक्ति से उपासना सा साधना की परिपूर्णता होती है। अकेला ज्ञान मात्र अहं की अभिव्यक्ति देगा, केवल ज्ञान में जीवन जीने वाला व्यक्ति मरुभूमि की तरह जीवन में रुखापन, मिथ्या दभ एवं कृत्रिम या काल्पनिक व्यक्तित्व निर्मित कर लेता है। अतः ज्ञान की परिपूर्णता है कर्म, भक्ति ज्ञान के बिना कर्म एक बंधन, आडम्बर बन जाती है। अतः विवेक पूर्वक कार्य करते हुए ही हम समाधि या मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं ज्ञान से सम्यक् दृष्टि मिलती है, दृष्टि पाकर उसका उपयोग कर्म एवं भक्ति में होना ही चाहिए, भगवान् भिखरियों को नहीं, पात्र अधिकारियों को देते हैं। चित्र नहीं सदैव चरित्र की पूजा करो।

स्वतंत्रता का अर्थ है उच्छृंखलता नहीं, स्व-माने आत्मा, तंत्र-माने अनुशासन, आत्मानुशासन का नाम ही स्वतंत्रता है। स्वावलम्बी आत्मनिर्भर जीवन जीते हुए दूसरों को आलम्बन दो, दूसरों को भी आत्मनिर्भर बनाओ, पहले साधक बनो, बाद में में सुधारक तुम स्वयं बन जाओगे। **''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः''** धरती हमारी माँ है हम इसके पुत्र हैं। राष्ट्रदेव सबसे बड़ा देवता एवं राष्ट्रधर्म माने राष्ट्र के प्रति हमारे कर्त्तव्य, हमारे दायित्व यह सबसे बड़ा धर्म है।

अन्याय एवं अधर्म को करना जितना पाप एवं अत्याचार को सहभागी है। राष्ट्र के प्रति कृतज्ञता, श्रद्धा व स्वभिमान हर इंसान में होना चाहिए।

योग साधना, सद्गुरुओं के सत्संग तथा दर्शन, उपनिषदादि आर्ष ग्रंथों के स्वाध्याय, तप, अनासक्त कर्मयोग व सेवा से जब अन्तर्दृष्टि खुल जाती है या आत्मदृष्टि उपलब्ध या प्राप्त हो जाती है तो सब स्वरुपों में ब्रह्मस्वरुप नजर आने लगता है। सब सम्बन्धों में ब्रह्म सम्बन्ध की अनुभूति होने लगती है। यही साधना, भक्ति या उपासना की पूर्णता है।

ओं य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।

यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

'जो आत्मा को देने वाला, बल को देने वाला परम सत्य है, जिसकी छाया अमृत है, जिसकी उपासना करना ही सबसे बड़ा काम है' उसी से दुनिया परे हट गई है। आत्मविश्वास की अग्नि जल उठी है, ज्वालाएं धधक रही हैं। कुछ पता नहीं कि इस धधकते हुए, उछलते हुए अग्नि-सागर में सारा

संसार कब कूद पड़े। मानवता जल जाये, महानाश जाग उठे। इस दशा को देखकर लोग चिल्ला उठते हैं। जिन्हें ज्योति और अमृत प्रिय है वे चिल्लाकार पूछते हैं– ''क्या मानवता को बचाले का कोई उपाय नहीं? क्या संसार के कल्याण का दिवाला निकल गया? समाप्त हो गया सब कुछ? क्या अब कोई आशा नहीं?''

इस दशा को देखकर मुझे पुरानी कथा आती है। आयुर्वेद शास्त्र के महान् ग्रंथ 'चरक' को लिखने वाले महर्षि पुनर्वसु अपने अद्वितीय ग्रंथ को लिखने के पश्चात् एक जंगल में जा रहे थे। घने जंगल की पगडण्डी पर वे थे, पीछे उनका शिष्य अग्निवेश।

एकदम महर्षि पुनर्वसु खड़े हो गए। आकाश की ओर देखा उन्होंने, चारों ओर देखा। एक लम्बी सांस लेकर बोले– ''महानाश आनेवाला है।''

अग्निवेश ने पूछा – ''कैसा महानाश, गुरुदेश?''

पुनर्वसु बोले – ''मैं देखता हूँ कि जल बिगड़ रहा है, पृथिवी बिगड़ रही है, वायु, तारे, आकाश, सूर्य और चन्द्र बिगड़ रहे हैं। अरे, अनाज अपनी शक्ति छोड़ देगा! औषधियाँ अपना प्रभाव छोड़ देंगी! पृथिवी पर टूटते हुए तारे गिरेंगे! विनाश करने वाली आंधियां चलेंगी! विनाशकारी भूकम्प उठेंगे! बड़े-बड़े बम गिरेंगे! महानाश का महाताण्डव जाग उठेगा! मनुष्य बचेगा नहीं!''

यह कथा ''चरक'' के विमान स्थान के तीसरे अध्याय में आती है। इसमें लिखा है कि अग्निवेश ने जब यह भयानक भविष्यवाणी सुनी तो हाथ जोड़कर कहा– ''गुरुदेव! आप यह भयभीत करने वानी भविष्यवाणी क्यों कर रहे हैं? सब रोग का सामना कर सकें, ऐसा ग्रंथ आपने लिख दिया। दुनिया के प्रत्येक रोग का इलाज लिख दिया। फिर भी यह विनाश आएगा तो क्यों!''

महर्षि पुनर्वसु ने कहा– ''इसलिए आएगा कि लोग धर्म को छोड़कर अधर्म की ओर चल पड़ेगे – सत्य को छोड़कर असत्य की ओर। सत्य और धर्म में उनकी रुचि न रहेगी।''

अग्निवेश ने पूछा– ''धर्म और सत्य की ओर मनुष्य की रुचि न रहने का क्या कारण होगा, गुरुदेव?''

गुरुदेव बोले– ''बुद्धि का बिगड़ जाना ही इस महानाश का कारण होगा। जब बुद्धि बिगड़ जाती है, जब वह सत्य का मार्ग छोड़कर असत्य की ओर बढ़ती है, तब धर्म में रुचि नहीं रहती।''

यह है इस आने वाले महानाश का कारण। 'चरक' में केवल रोग ही नहीं बताये गये हैं, इसकी

चिकित्सा भी बताई गई है। अग्निवेश ने जब यह पूछा कि महानाश के रोग का कारण क्या होगा तो महर्षि पुनर्वसु ने स्पष्ट और सीधे शब्दों में कारण भी बता दिया। रोग को कोई नहीं चाहता, परन्तु कारण उत्पन्न हो जाये तो रोग अवश्य पैदा होता है। क्यों जी करौलबाग में रहने वालो! क्या आप में से कोई चाहता था कि आपको पीलिया की बीमारी हो जाये? कोई नहीं चाहता था। फिर भी जब कर्ण पैदा हुआ तो पीलिया जाग उठा। कितने ही घरों में हाहाकार जाग उठा। बुद्धि के बिगड़ जाने से सर्व प्रकार के विनाश उत्पन्न हो जाते हैं इसलिए चरक ने कहा–

प्रज्ञापराधो मूलं सर्वरोगाणाम्। 'बुद्धि का बिगड़ जाना ही सब रोगों का कारण है।' परन्तु बुद्धि के बिगड़ जाने से केवन शारीरिक रोग पैदा नहीं होते, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, आत्मिक सभी रोग पैदा होते हैं। इसलिए कहते हैं कि जब नाश का समय निकट आता है, तब बुद्धि उल्टे मार्ग पर चलने लगती है। भगवान् कृष्ण ने भी कहा– **बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।** गीता २/६३।। 'बुद्धि का नाश होने से महानाश जाग उठाता है।'

'वेद ही मनुष्य मात्र के परम आदरणीय व माननीय धर्म ग्रन्थ क्यों?'

–मनमोहन कुमार आर्य

प्रकृति एक जड़ पदार्थ है जो अपने मूल रूप में सत्व, रज व तम गुणों वाली कहलाती है। ईश्वर इसी से पूर्व कल्पों के अनुसार सृष्टि की रचना करता है जिसमें सभी सूर्य, चन्द्र, पुथिव्यां, अन्य लोक–लोकान्तर, ग्रह, उपग्रह, आकाश गंगायें, निहारिकायें एवं जीवात्मा के प्राणादियुक्त सूक्ष्म शरीर आदि आते हैं। यह सब ज्ञान वेदों में उपलब्ध है। सृष्टि से वेदों के ज्ञान का मिलान करने पर यह सत्य सिद्ध होता है। अन्य किसी मत में सृष्टि विषयक इन तथ्यों का पूर्ण सत्य उद्घाटन नहीं हुआ है जिससे यह सिद्ध होता हो कि वेदेतर सभी मत व मतान्तर अल्पज्ञ मनुष्यों के द्वारा उद्घाटित व प्रचलित हैं जबकि वेद सृष्टिकर्ता ईश्वर की ज्ञान व विज्ञान से युक्त कृति है। सत्यार्थ प्रकाश का ग्यारहवां, बारहवां, तेरहवां तथा चौदहवां समुल्लास प?कर भी इन सभी तथ्यों को प्रत्यक्ष किया जा सकता है।

वेदों की उत्पत्ति और उनके विषय में कुछ तथ्यों पर भी दृष्टिपात कर लेते हैं। सृष्टि के आरम्भ काल में ईश्वर ने मनुष्य आदि प्राणियों को अमैथुनी सृष्टि अर्थात् बिना माता–पिता के संसर्ग हुए उत्पन्न किया था। यह सभी स्त्री व पुरुष युवावस्था में उत्पन्न किये गये थे। यदि ईश्वर इन्हें शैशवास्था में उत्पन्न करता तो इनके पालन करने के लिए माता–पिता की आवश्यकता होती और यदि इन्हें वृद्ध बनाता तो इनसे मैथुनी सृष्टि न चल पाती और वहीं समाप्त हो जाती। अमैथुनी

सृष्टि में उत्पन्न इन युवा स्त्री पुरुषों को बोलने के लिए भाषा और पदार्थों के नाम व क्रिया पद आदि का ज्ञान चाहिये था। किसने किससे कैसा व्यवहार करना होता है, यह ज्ञान भी इन्हें बताना आवश्यक था। भूख लगने पर फल, गोदुग्ध व वनस्पितियों का सेवन करना है और प्यास लगने पर वहां निकट के स्वच्छ जलाशय व नदी का जल पीना है, यह ज्ञान भी सभी मनुष्यों को बताना था। इन सबकी पूर्ति ईश्वर ने इन ऋषियों को चार वेदों का ज्ञान देकर पूरी की। जिसे ऋग्वेद का ज्ञान दिया वह अग्नि ऋषि कहलाये, जिसे यजुर्वेद का ज्ञान दिया वह वायु ऋषि, जिसे सामवेद का ज्ञान दिया वह आदित्य ऋषि और जिसे अथर्ववेद का ज्ञान दिया वह अंगिरा ऋषि जाने जाते हैं। यह वर्णन वैदिक वांग्मय के अन्तर्गत 'ब्राह्मण ग्रन्थों' में वर्णित हैं। इन चार ऋषियों को ईश्वर ने इनकी आत्मा में अपने जीवस्थ वा अन्तर्यामीस्वरूप से प्रेरणा द्वारा ज्ञान दिया था। चार वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के विषय क्रमशः ज्ञान, कर्म, उपासना और विज्ञान है। सभी वेदों में ईश्वर व उसकी स्तुति, प्रार्थना व उपासना का ज्ञान भी दिया गया है जिससे मनुष्य सृष्टिकर्ता के ज्ञान व उसकी उपासना में भ्रमित न हो। इन चार ऋषियों ने ईश्वर की प्रेरणा से चार वेदों का ज्ञान एक एक करके ब्रह्मा जी को दिया। इन पांच ऋषियों के एक स्थान पर उपस्थित होने के कारण चार वेदों का ज्ञान पांचों ऋषियों को हो गया। इसके बाद इन ऋषियों ने अन्य युवा स्त्री व पुरुषों को उपदेश व बोलकर ज्ञान कराया। यह उपदेश पद्धति से ज्ञान देने की परम्परा का आरम्भ था जो अद्यावधि प्रचलित है। ऋषि दयानन्द ने भी गुरु विरजानन्द जी से वेद-व्याकरण का ज्ञान प्राप्त कर उस ज्ञान से वेदों की संहितायें प्राप्त करने के अनन्तर चार वेदों का व्याकरण व अन्य शास्त्रों की सहायता से आलोचन किया और बाद में वेदभाष्य का कार्य आरम्भ किया जिससे साधारण मनुष्य भी लाभान्वित हो सकें। हमें लगता है कि लोकभाषा हिन्दी सहित संस्कृत में वेदों के ज्ञान-विज्ञान युक्त प्रमाणिक भाष्य का कार्य सृष्टि के इतिहास में ऋषि दयानन्द जी ने ही पहली बार किया। इसका सुपरिणाम है कि आज एक साक्षर व्यक्ति भी वेदों के गम्भीर रहस्यों को जानता है। वेदभाष्य का अंग्रेजी अनुवाद भी आज उपलब्ध है। आज हम व देश-विदेश के लाखों लोग ऋषि दयानन्द व उनके अनुयायी विद्वानों के वेदभाष्यों से लाभान्वित हो रहे हैं। यह ऋषि दयानन्द का मानव जाति पर बहुत ब?ा उपकार है। यदि ऐसा न होता तो हमारा व लाखों करो?ों मनुष्यों का जीवन उन्नत न होता और न ही परजन्म सुधरता। ऋषि दयानन्द जी के सम्पूर्ण मानव जाति पर अन्य अनेक उपकार हैं जो लेख के विषय से भिन्न होने के कारण यहां उन्हें उल्लेखित नहीं किया जा रहा है। तथापित संक्षेप में इतना तो बता देते हैं कि ऋषि दयानन्द ने वेदानुसार ईश्वरीय उपासना की परिणामोत्पाक सत्य विधि सिखाई। अवतारवाद, मूर्तिपूजा, व्यक्तिपूजा, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, जन्मना जाति व्यवस्था आदि का खण्डन किया। देशवासियों को देश को आजाद करने की प्रेरणा की। उन्होंने जन्म से सभी को शूद्र बताया। स्वामी दयानन्द जी ने विद्या आदि संस्कारों तथा आचरण के आधार पर कर्मणा ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य वर्णों को

मान्यता दी। अनेक अनुसार अच्छे कर्मों को करके शूद्र ब्राह्मण बन सकता है और ब्राह्मण नीच कर्म करके शूद्र हो जाता है। बाल विवाह व बेमेल विवाह को उन्होंने अनुचित ठहराया, गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार विवाह का समर्थन एवं छोटी आयु की विधवाओं को पुनर्विवाह का अधिकार दिया। उन्होंने स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार भी दिया। ऐसे अनेकानेक उपकार ऋषि दयानन्द के मानव जाति पर हैं।

वेद ही संसार के सभी मनुष्यों के आदरणीय एवं माननीय ग्रन्थ हैं। मतमतान्तरों के ग्रन्थों में वैसा निर्भ्रांत ज्ञान नहीं है जैसा कि वेदों में है। मत-मतान्तरों के ग्रन्थों में मिथ्या मान्यताओं व विश्वासों की भरमार है जबकि वेद इन अज्ञानमूलक मान्यताओं से मुक्त है। इन मत-मतान्तरों के कारण ही संसार में अन्धकार फैला और लोग ईश्वर के अस्तित्व को न मानने वाले नास्तिक बने हैं। मत-मतान्तरों की ईश्वर विषयक मान्यतायें बुद्धिमान व विवेकशील मनुष्यों में भ्रम उत्पन्न करती हैं तथा सभी मत-मतान्तर ईश्वर के यथार्थ स्वरूप को न जानने व बताने के कारण वैज्ञानिक बुद्धिवाले मनुष्यों को सन्तुष्ट नहीं कर पाते। इसलिए संसार का एक बहुत ब?ा बौद्धिक वर्ग नास्तिक बन गया है। यूरोप व अन्य देशों में उत्पन्न हुए कुछ प्रसिद्ध वैज्ञानिकों ने वहां प्रचलित नाना मत-मतान्तरों की ईश्वर विषयक मान्यताओं से सन्तुष्ट न होने के कारण संसार में ईश्वर के विद्यमान न होने की घोषणा की। इसका दोष अविद्यायुक्त सभी मत-मतान्तरों पर ही है। यह मत-मतान्तरों की अक्षमता है। वैदिक धर्म में ईश्वर का बुद्धिसंगत एवं सृष्टि में विद्यमान ईश्वर के गुणों के अनुरूप स्वरूप का वर्णन हुआ है। वैदिक विचारधारा से जु? सभी विद्वान व वैज्ञानिक ईश्वर को मानते व इसका युक्ति एवं तर्क आदि प्रमाणों से समर्थन एवं प्रचार करते हैं। हमारा विचार है कि यदि यूरोप आदि सभी देशों के वैज्ञानिक वेद वा ऋषि दयानन्द द्वारा उद्घाटित ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाणों पर एक बार दृष्टिपात कर लें तो वह अवश्य ईश्वर के अस्तित्व को न केवल स्वीकार ही कर लेंगे अपितु ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना करना भी आरम्भ कर देंगे। यदि आज ऋषि दयानन्द, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी और स्वामी श्रद्धानन्द जी आदि लोग जीवित होते तो यह कार्य पूर्ण हो गया होता। इसके लिए हमारे विद्वानों को ईश्वर के समर्थन में प्रामाणिक लेखन कर उसे वैज्ञानिकों तक पहुंचाना चाहिये। वेद आज के भी और भविष्य के भी सभी मनुष्यो के प्रमाणिक एकमात्र धर्म ग्रन्थ हैं। ऋषि दयानन्द के शब्दों में 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का प?ना-प?ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।' विवेक पूर्वक वेदों के प्रचार द्वारा जितनी वेदों की प्रतिष्ठा ब?ेगी उतना ही संसार से अज्ञान मिटेगा और देश व विश्व में शान्ति में वृद्धि होगी। ओ३म् शम्।।

गुरुकुल आश्रम आमसेना द्वारा संचालित
गुरुकुल शांतिवन आश्रम लोहरदगा
(झारखण्ड) में
आर्यवीर दल शिविर का
भव्य आयोजन किया गया

R.N.I. No. ORIHIN/2000/1876 P.R.No. Kalahandi/03/2016-2018

गुरुकुल आश्रम आमसेना द्वारा संचालित राम दुलारी बृजकिशोर धर्मार्थ अस्पताल में 20 जून को निशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन जगन्नाथ हॉस्पिटल रायपुर से 20 डॉक्टर के उपस्तिथि में किया गया।

सुन्दरगढ़ के गर्गड़वाहाल ग्राम में 10 दिवसीय संस्कार शिविर के आयोजन में उपस्थित स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, डॉ. कुञ्जदेव मनीषी आदि अनेक विद्वानों के उपस्थिति व प. विशिकेषन जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ।

सेवा में,

.....

.....

.....

सदस्यता हेतु एक प्रतिः 10 रु. वार्षिक शुल्कः 100 रु. आजीवनः 1000 रु.

प्रधान सम्पादकः स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, गुरुकुल आश्रम आमसेना की ओर से शारदा आफसेट प्रिन्टर्स, ग्राम-डुण्डा, सेजबहार रोड, रायपुर से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया। प्रकाशकः गुरुकुल आश्रम, आमसेना, खरियार रोड, नुआपड़ा (ओड़िशा)